P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कार्यशील महिला एवं किशोरवय संतान में संबंध : एक मनोसामाजिक विश्लेषण

राजश्री मठपाल
असिस्टेट प्रोफेसर,
समाज शास्त्र विभाग,
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान

सारांश

विज्ञान एवं तकनीकि के वर्तमान आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक भूमिका में विशेष रूप से परिवर्तन दृश्यमान हुआ है। महिलाऐं गृहिणी की भूमिका के साथ–साथ कार्यशील माता की भूमिका का निर्वहन भी सफलतापूर्वक कर रही है। नवीन कार्यक्षेत्रों के विकास का व्यापक प्रभाव विशेषतया शहरी महिलाओं पर पड़ा है। मध्यम वर्गीय अधिकांश महिलाऐं इन नवीन कार्यक्षेत्रों से जुड़ रही है। परन्तु इसी के साथ–साथ सामाजिक मानवशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविद्ों के मध्य बच्चों की उचित देख–भाल एवं सामाजिक मनोविकास का विचारणीय प्रश्न भी उत्पन्न हो गया है। सामान्यतया लोगों का यह मानना है कि कार्यशील माताओं की संतानों पर उनके कार्यशील होने का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसका मुख्य कारण है, संतान के लिए उचित समय एवं वातावरण उपलब्ध न कर पाना। इसी प्रकार किशोरावस्था समस्या बाहुल्य तथा संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्था समस्या बाहुल्य तथा संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्था है। ऐसे में किशोरवय का अभिभावकों द्वारा उचित दिशा–निर्देश एवं देखभाल करना आवश्यक है, ताकि वे अपने कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों एवं पारिवारिक संबंधों के महत्त्व को समझ सके। इसी क्रम में कार्यशील माता के लिए यह अत्यंत जरूरी हो जाता है कि वह कार्यकारी भूमिका के साथ–साथ एक माँ के रूप में अपनी किशोरवय संतान की उचित देखभाल व सामाजिक मनोविकास करे। अतः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य किशोरवय संतान के मनो–सामाजिक विकास में कार्यशील माता की भूमिका, पारिवारिक वातावरण तथा किशोरावस्था को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु उद्देश्यपरक निदर्शन पद्धति द्वारा वनस्थली विद्यापीठ की शिक्षण कार्य से जुड़ी 50 कार्यशील माताओं एवं उनके किशोरवय संतानों के मध्य संबंधों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : कार्यशील माता, किशोरवय संतान, मनोसामाजिक विकास।

प्रस्तावना

वर्तमान समय के बदलते हुऐ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की सामाजिक, शैक्षणिक तथा आर्थिक प्रस्थिति भी पहले की अपेक्षा सुदृढ़ हो रही है। जहाँ एक ओर महिलाओं पारम्परिक भूमिकाऐं यथावत् बनी हुई है, वहीं उच्च शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों की उपलब्धता के कारण उनकी नवीन भूमिकाऐं भी अस्तित्व में आई है। जिसके फलस्वरूप परम्परागत भूमिकाओं के निर्वहन के तरीकों में परिवर्तन दृव्यमान हो रहा है। यदि भारतीय सामाजिक व्यवस्था की बात करें तो, पत्नी के रूप में प्रत्येक महिला का प्रथम परम्परागत कर्त्तव्य पति ससुराल पक्ष के लोगों का सम्मान तथा अपने कार्यो व व्यवहार से उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरना है। इसी प्रकार माँ की भूमिका में हर महिला को अपनी संतानों के प्रति अनेक उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्यों का पालन करना पड़ता है। ओकले (1975) ने लिखा है कि, मातृत्व की धारणा में तीन प्रमुख बाते होती है, प्रथम बच्चों को माँ की जरूरत, द्वितीय माँ को बच्चों की आवश्यकता एवं तीसरा मुख्य सामान्यीकृत तथ्य यह है कि मातृत्व किसी भी महिला के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। अतः माँ की भूमिका संतान के भविष्य एवं व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

21वीं सदी में जबकि हमारा देश आधुनिकीकरण के साथ विकास की ओर अग्रसर हो रहा है, ऐसे में स्त्रियों का कार्यशील समाज के समक्ष उभर के आया है, कार्यशील महिला होने के साथ वह एक माँ भी है, इस दशा में महिलाओं को दोहरे कर्त्तव्यों का निर्वहन करना पड़ता है। कार्यस्थल पर कार्य करते हुए बच्चों की उचित देख–भाल व समाजीकरण करना उनका प्रमुख ध्येय

है। इसीलिए सामाजिक मानवशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों के मध्य बच्चों की उचित देखभाल व सामाजिक मनोविकास का विचारणीय प्रश्न उत्पन्न हो गया है। सामान्यतया लोगों का यह मानना है कि, कार्यशील माताओं की संतानों पर उनके कार्यशील होने का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसका मुख्य कारण है, संतान के लिए उचित समय एवं वातावरण उपलब्ध न कर पाना। इसी प्रकार किशोरावस्था समस्या बाहुल्य तथा संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्था है। ऐसे में किशोरवय का अभिभावकों द्वारा उचित दिशा–निर्देश एवं देखभाल करना आवश्यक है, ताकि वे अपने कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्वों एवं पारिवारिक संबंधों के महत्त्व को समझ सकें। इसी क्रम में कार्यशील माता के लिए भी यह अत्यंत जरूरी हो जाता है कि वह कार्यकारी भूमिका के साथ–साथ एक माँ के रूप में अपनी किशोरवय संतान की उचित देखभाल व सामाजिक मनोविकास करें।

अध्ययन के उद्देश्य

उक्त शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है –

1. किशोरवय संतान के सामाजिक–मनोविकास हेतु कार्यशील माता की भूमिका एवं पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
2. किशोरवय को प्रभावित करने वालें कारकों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

जहाँ एक ओर उच्च शिक्षा तथा उच्च व्यावसायिक पदों पर कार्यरत् महिलाऐं अपने दायित्वों का निर्वाह करने के साथ–साथ अपने विकास की कड़ी को जीवनवृत्ति विकास से जोड़ती रही है। वहीं दूसरी ओर किशोरवय संतानों के सामाजिक मनोविकास की प्रवृत्ति के संदर्भ में मौलिक प्रश्न यह है कि ''किशोरवय संतान के सामाजिक मनोविकास में कार्यशील माता एवं पारिवारिक वातावरण की क्या भूमिका रहती है?'' उक्त प्रश्न सामाजिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

अनुसंधान प्रविधि

उक्त शोध अध्ययन वनस्थली विद्यापीठ में शिक्षण क्षेत्र में कार्यरत् महिलाओं को निदर्श हेतु सम्मिलित किया गया है। वनस्थली विद्यापीठ में वर्तमान समय में उच्च शिक्षण में कुल 522 शिक्षणकर्त्ता है, जिसमें से 309 महिला शिक्षिकाऐं है। विद्यालयी शिक्षण में कुल 142 शिक्षणकर्त्ता है, जिसमें से 117 महिला शिक्षिकाऐं है। प्रस्तुत शोध कार्य में तथ्य संकलन हेतु शिक्षण कार्य से संबंधित 50 महिलाओं का चयन उद्देश्य परक निदर्शन पद्धति के द्वारा किया गया है।

तथा संकलन हेतु प्राथमिक स्त्रोत प्रश्नावली पद्धति का प्रयोग किया गया है। सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि एवं निदर्श हेतु समगत संबंधित तथ्यों को एकत्रित करने हेतु द्वितीयक स्त्रोत जैसे – शोध पत्रों, पुस्तकों, विभागीय पत्र आदि का उपयोग किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या सामान्य प्रतिशत द्वारा सारणीयन के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण

1. आयु के आधार पर उत्तरउदायित्वों का वर्गीकरण

क्र. सं.	आयु वर्ग	उत्तरदायित्वों की संख्या	प्रतिशत
1.	35–40 वर्ष	15	30%
2.	40–45 वर्ष	17	34%
3.	45–50 वर्ष	11	22%
4.	50 वर्ष से अधिक	7	14%
	कुल योग	**20**	**100**

2. धर्म के आधार पर उत्तरदायित्वों का वर्गीकरण

क्र. सं.	धर्म	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हिन्दू	42	84%
2.	मुस्लिम	3	6%
3.	ईसाई	2	4%
4.	अन्य	3	6%
	कुल योग	**50**	**100**

3. पृष्ठभूमि के आधार पर उत्तरदायित्वों का वर्गीकरण

क्र. सं.	पृष्ठभूमि	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	ग्रामीण	28	56%
2.	शहरी	32	64%
	कुल योग	50	100

4. वैवाहिक प्रस्थिति के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	वैवाहिक प्रस्थिति	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	विवाहित	38	76%
2.	विधवा	7	14%
3.	तलाकशुदा	5	10%
	कुल योग	**50**	**100**

5. परिवार के प्रकार के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	परिवार का प्रकार	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	16	32%
2.	एकाकी परिवार	34	68%
	कुल योग	**50**	**100**

6. कार्यक्षेत्र के आधार पर उत्तदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	कार्यक्षेत्र	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	उच्च शिक्षण	36	72%
2.	विद्यालयी	14	28%
	कुल योग	**50**	**100**

7. बच्चों की देख–रेख के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों की देख–रेख करते है	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	परिवर के अन्य सदस्य	13	26%
2.	आया	37	74%
	कुल योग	**50**	**100**

8. बच्चों के साथ संबंध के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों के साथ किस प्रकार का संबंध	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	स्नेहमयी	33	66%
2.	मैत्रीपूर्ण	17	34%
3.	अलगाव पूर्ण	0	0%
	कुल योग	**50**	**100**

9. संतानों द्वारा व्यक्तिगत समस्यायें साझा करने के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	आयु वर्ग	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	31	62%
2.	नहीं	19	19%
	कुल योग	**50**	**100**

10. व्यक्तिगत समस्यायें साझा न करने के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	व्यक्तिगत समस्यायें साझा न करने का कारण	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	संकोची प्रवृत्ति	13	8.42%
2.	संचार अंतर	2	10.53%
3.	घनिष्ठ संबंध न होना	–	–
4.	अधिक समय साथ व्यतीत न कर पाना	4	21.05%
	कुल योग	**19**	**100**

11. बच्चों की विद्यालयी गतिविधि में भाग लेने के आधार पर उत्तदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों की विद्यालयी गतिविधि में भाग लेती है	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	कभी–कभी	27	54%
2.	अक्सर	14	28%
3.	हमेशा	9	18%
4.	कभी नहीं	–	–
	कुल योग	**50**	**100**

12. बच्चों में शारीरिक या भावनात्मक परिवर्तन के आधार पर उत्तदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों में शारीरिक या भावनात्मक परिवर्तन आए है	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	50	100%
2.	नहीं	–	–
	कुल योग	**50**	**100**

13. बच्चों के साथ भावनात्मक वार्तालाप करने के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों के साथ भावनात्मक वार्तालाप करती हैं	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	38	76%
2.	नहीं	12	24%
	कुल योग	**50**	**100**

14. बच्चों से नशीली दवाओं के व्यसन पर चर्चा करने के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों से नशीली दवाओं के व्यसन पर चर्चा की है	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	39	78%
2.	नहीं	11	22%
	कुल योग	**50**	**100**

15. बच्चों के समक्ष लैंगिक रूझान पर चर्चा के आधार पर उत्तदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों के समन्त लैंगिक रूझान पर चर्चा की है	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	23	46%
2.	नहीं	27	54%
	कुल योग	**50**	**100**

16. बच्चों के समक्ष पति से मतभेद करने के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों के समक्ष पति से मतभेद करती है	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	21	55.26%
2.	नहीं	17	44.74%
	कुल योग	**38**	**100**

17. बच्चों की परवरिश में स्वयं एवं परिवार की भूमिका के प्रति संतुष्टि के आधार पर उत्तरदात्रियों का वर्गीकरण

क्र. सं.	बच्चों की परवरिश में स्वयं एवं परिवार की भूमिका के प्रति संतुष्टि	उत्तरदात्रियों की संख्या	प्रतिशत
1.	अत्यधिक संतुष्ट	2	4%
2.	संतुष्ट	23	46%
3.	अत्यधिक असंतुष्ट	4	8%
4.	तटस्थ	21	42%
	कुल योग	**50**	**100**

निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध में एकत्रित किये गये तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तदात्रियाँ 40–45 वर्षक के आयु वर्ग की है तथा हिन्दू धर्म से जुड़ी है। समस्त चयनित उत्तरदात्रियों में से अधिकतर शहरी पृष्ठभूमि से है तथा विवाहित है। ज्यादातर उत्तरदात्रियों एकांकि परिवार में रहती है तथा उच्च शिक्षण के कार्यक्षेत्र से जुड़ी है। प्रस्तुत तथ्यों द्वारा यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि, अधिकांश उत्तरदात्रियों की संतानों की देख–रेख आया करती है तथा ज्यादातर उत्तरदात्रियों के अपनी संतानों के साथ स्नेहमयी संबंध है। आधे से भी अधिक उत्तदात्रियों की संताने उनके साथ व्यक्तिगत समस्याओं को साझा करती है। जिन उत्तरदात्रियों की संताने उनके साथ व्यक्तिगत समस्यायें साझा नहीं करती है, उसका मुख्य कारण संकोची प्रवृत्ति होना, संचार अंतर होना तथा अधिक समय साथ न व्यतीत कर पाना है। अधिकांश उत्तरदात्रियाँ बच्चों की विद्यालयी गतिविधि में कभी–कभी भाग लेती है। समस्त उत्तरदात्रियाँ यह मानती है कि पिछले कुछ समय से उनकी संतानों में शारीरिक एवं भावात्मक परिवर्तन आए है। इसी पर तीन चौथाई उत्तरदात्रियाँ अपनी संतानों के साथ भावात्मक वार्तालाप करती है। अधिकांश उत्तरदात्रियों ने अपनी संतानों के समक्ष नशीली दवाओं के व्यसन पर चर्चा की है, परन्तु लैंगिक रूझान जैसे संवेदनशील विषय पर अभी वार्तालाप हुआ है। आधी उत्तदात्रियाँ बच्चों के समक्ष पति के साथ मतभेद करती है तथा अधिकतर उत्तरदात्रियाँ बच्चों की परवरिश में स्वयं एवं परिवार की भूमिका के प्रति संतुष्ट है तथ वहीं दूसरी ओर कतिपय उत्तरदात्रियाँ इस संबंध में तटस्थ राय रखती है।

अतः उक्त शोध ''कार्यशील माताऐं एवं किशोरवय संतान में संबंध एक मनोसामाजिक विश्लेषण'' से यह स्पष्ट होता है कि, किशोरवय के सामाजिक मनोविकास में परिवार के वातावरण एवं माता की भूमिका की अहम् होती है, तथा वर्तमान समय कार्यशील माताऐं समय की कमी होने के बावजूद भी अपनी किशोरवय संतान के सामाजिक एवं मानसिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभाती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Dakely, Ann, (1974), " Dual career Caiple", Indian Journal of Applied Psychology, 27-34.*
2. *Data of 2018 from karmik vibhag of Banasthali Vidyapith.*
3. *Poloma and Garland,T.N. (1971), "Jobs or career : The case of the professionally employed married women", in Andre Michael (ed.), family Issues of employed women in Europe and America EJ Brite, London.*
4. *Ranjan, Kumud, (1993), "Women and Modern Occupation in India",Chugh Publications, Allahabad,India.*
5. *Shaiess, N.(1980), "The working wife and mother: A new women?" American Journal of Psychotherapy, 34 (3).*
6. *Singh,Annu,Kiran U.V.,(2014) "Impact of mother's working status on personality of adolesents",International Journal of Advanced Scientific and Technical Research.*
7. *Lemmon, Megan, Patterson Sarah E.,Martin Molly A.,(2018) "Mother's time and relationship with their Adolescents children: The intersecting influence of family structure and maternal labor force participation"*